Exam. Code: 0002
Sub. Code: 0112

2071

B.A./B.Sc.(General)-2nd Semester

Sanskrit (Elective)

Paper: Katha, Niti Avem Vyakaran

Time allowed: 3 Hours | Max. Marks: 90

नोटः— सुन्दर, संक्षिप्त एवं सारगर्भित लिखें। उत्तर–पुस्तिका में प्रश्न संख्या अवश्य लिखें। प्रश्नों को क्रमशः हल करने का प्रयत्न करें।

-*-*-*-

प्रश्न–१: निम्न गद्यांशों में से एक का सप्रसंग अनुवाद करें:–

(क) ततस्तैश्चतुर्भिर्मिलित्वोक्तम्–"वयं सर्वविद्यापारङ्गताः। तदुपाध्यायमुत्कलापयितत्वा स्वदेशे गच्छामः। तथैवाऽनुष्ठीयतामित्युक्त्वा ब्राह्मणः उपाध्यायमुत्कलापयित्वा, अनुज्ञां लब्ध्वा पुस्तकानि नीत्वा, प्रचलिताः। यावत्किञ्चिन्मार्गं यान्ति, द्वौ पन्थानौ समायातौ दृष्ट्वा उपविष्टाः सर्वे।

(ख) मत्सयाश्च विषण्णवदना मिथोमन्त्रं चक्रुः ततो मण्डूक आह–"भोः, शतुबुद्धे! श्रुतं धीवरोक्तं भवता? तत्किमत्र युज्यते कर्तुम्, पलायनमवष्टम्भो वा? यत्कर्तुं युक्तं भवति तदादिश्यतामद्य।" तच्छ्रुत्वा सहस्रबुद्धिः प्रहस्य आह – भो मित्र! मं भैषीः, तयो वचनस्मरण मात्रादेव भयं न कार्यम्। न भेतव्यम्।

(ग) अथ तत्र वृक्षे कश्चिद् व्यन्तरः समाश्रित आसीत्। अथ तेनाभिहितम् – "भोः महाश्रयोऽयं पादपः सर्वथा रक्षणीयः। यतोऽहमत्र महासौख्येन तिष्ठामि, समुद्र कल्लोलस्पर्शनाच्छीतवायुनाप्यायितः। " कौलिक आह – 'भो। किमह दारुसामग्री विना में कुटुम्बः बुभुक्षया पीडयते। तस्मादन्यत्र शीघ्रं गम्यताम् अहमेन कर्त्तयिष्यामि।" (1×5)

प्रश्न–२: निम्न श्लोकों में से दो की सप्रसंग व्याख्या करें:–

(क) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।
अर्धेन कुरुते कार्यं, सर्वनाशो हि दुःसह।।

(ख) न यत्रास्ति गतिर्वायोः, रश्मीनां च विवस्वतः।
तत्राऽपि प्रविशत्याशुः बुद्धिर्बुद्धिमतां सदा।

(ग) सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनाश्चैक विंशति।
तानास्त्वेकोन पञ्चाशत्तिस्त्रो मात्राः, लयास्त्रयः।।

(घ) सारमेयस्य चाऽश्वस्य रासभस्य विशेषतः।
मुहूर्तात्परतो न स्यात्प्रहारजनिता व्यथा।। (2×5)

प्रश्न–३: 'मत्स्य–मण्डूक कथा' अथवा 'मन्थरकौलिक–कथा' में से एक कथा का सार लिखें। (1×5)

प्रश्न–४: निम्न श्लोकों में से दो की सप्रसंग व्याख्या करें:–

(क) असन्तोनाभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः कृशधनः,
प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभङेऽप्यसुकरम्।
विपुद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महताम्,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्।।

(ख) सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्तववतां, न खलु व्यस्तेजसो हेतुः।।

(ग) यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।।

Contd.....P/2

(घ) दानं भोगो नाश: तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुड.क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।। (2×5)

प्रश्न–५: निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:–

(क) सर्व: कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जन: सत्त्वानुरूपं फलम्।

(ख) येनैकेन बिना गुणास्तृणलवप्राया: समस्ता इमे।

(ग) नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमि:। (1×5)

प्रश्न–६: निम्न शब्दों में से दस शब्दों को संस्कृत में लिखें:–

गाय, चूहा, बकरा, बैल, कोयल, गीध, पपीहा, बतख, सारस, आंवला, नीम, पीपल, गुलाब, रात की रानी, पत्ता। (10×1)

प्रश्न–७: निम्न अव्ययों में से पाँच अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करें:–

(क) अद्य, पुरत:, परश्व:, ह्य:, दक्षिणत:, अन्त:, कथम्, वामत:, नीचै:, बहि: (5×1)

(ख) निम्न संख्यावाची शब्दों में से पाँच को संस्कृत भाषा में लिखें:–
55, 64, 70, 72, 77, 81, 83, 89, 91, 94 (5×1)

(ग) सभी ग्रह अथवा मास के नाम लिखिए। (5)

(घ) निम्न शब्दों में से दो शब्दों के सम्पूर्ण विभक्ति रूप लिखें:–
पितृ, मातृ, भवत्, युष्मद्। (2×5)

(ड.) निम्न धातुओं में से दो धातुओं के निर्दिष्ट लकारों के रूप लिखें:–
✓नी (लोट लकार) ✓दृश (लट् लकार) ✓लिख (लृट लकार) ✓भू (लड्. लकार) (2×5)

प्रश्न–८: निम्नलिखित में से पाँच वाक्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद करें:–

(क) दो बालक पुस्तकें पढ़ते हैं।

(ख) हम मुख से खाते हैं।

(ग) पापी को धिक्कार है।

(घ) राम स्वभाव में मधुर है।

(ड.) गाँव के सब ओर जल है।

(च) कृष्ण को नमस्कार है।

(छ) विद्या के बिना मानव पशु होता है।

(ज) किसी की निन्दा न करो।

(झ) बच्चों को लड्डु पसन्द हैं।

(ञ) हम कल दिल्ली जाएंगे। (5×2)

-*-*-*-